श्री महावीर भगवान का मंदिर पिण्डवाड़ा

यह शिखरबंद बावन जिनालय का विशाल मंदिर दिल्ली अहमदाबाद रेलमार्ग पर सिरोही रोड़ रेल्वे स्टेशन से 2 किलोमीटर, सिरोही मुख्यालय से 25 किलोमीटर, उदयपुर से 105 किलोमीटर दूर गाँव के मंदिर मोहल्ले में स्थित है।

यह नगर पिण्डर जी द्वारा बसाया गया है। जिससे इसका प्राचीन नाम पिण्डर था। यह गांव 7 वीं–8वीं शताब्दी का होना बताया है। उस समय सूर्य मंदिर की स्थापना हुई थी जिसको आज लक्ष्मीनारायण मंदिर कहा जाता है। वही सूर्य मंदिर रहा है।

वि.सं. 1465 के शिलालेख के अनुसार इसका नाम पिण्डवाटक था, पिण्डर जी से पिण्डवाड़ा पुकारा जाने लगा।

यह मंदिर 12वीं शताब्दी का निर्मित होना बताया गया जैसा कि इस मंदिर के गभारा के पास एक देवरी में स्थापित प्रतिमा पर वि.सं. 1229 का लेख उत्कीर्ण है। उल्लेखानुसार यह मंदिर वि.सं. 1100 का निर्मित है। नव चौकी की दीवार पर उत्कीर्ण वि.सं. 1465 फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा का एक शिलालेख है जिसके आधार पर श्री कुँवरपाल एवं मंत्री श्री लींबा द्वारा मंदिर का जीर्णोद्धार कराने का उल्लेख है। वि.सं. 1234, 1274 के शिलालेख उपलब्ध हुए ।

वि.सं. 1464 माघ शुक्ला 6 का लेख एक प्रतिमा को प्रतिष्ठित कराने का उल्लेख है। कुँवरपाल राणकपुर तीर्थ के निर्माता श्री धरणाशाह के पिता थे। प्राप्त शिलालेख, अन्य प्रमाणों के आधार पर यह मंदिर धरणाशाह के पूर्वजों द्वारा निर्मित हैं।

बावन जिनालय की देवरियों पर शिखर बने हुए हैं। स्तम्भ, तोरण कलात्मक है।

मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, शृंगार चौकी, नक्कारखाना, कलात्मक गुम्बज बने हुए है।

श्री विमलनाथ भगवान का मंदिर है जिसको पद्मप्रभ भगवान का मंदिर के नाम से जाना जाता है इससे प्रतीत होता है कि पूर्व में यह पद्मप्रभ भगवान का मंदिर रहा होगा। मूलगभारा के बाहर सरस्वती देवी की प्रतिमा है। एक बड़ा गभारा में श्री सम्भवनाथ भगवान विराजित है इसके बाहर मण्डप में बसंतगढ़ से लाई गई धातु की प्रतिमा विराजित है। इस मंदिर का अंतिम ध्वजादण्ड और अनेक मुर्तियों की प्रतिष्ठा सं. 1962 में सम्पन्न हुई और कई मूर्तियों भोयरे में है जो बसन्तगढ़ से लाई गई हैं।

गर्भगृह में दो काउसग्गीय प्रतिमाएँ गुप्तकालीन कला की है। ये प्रतिमाएं बसन्तगढ़ के खण्डहर से लाई गई है। दाईं ओर की प्रतिमा के मस्तक पर बाल दिखाई देते है। अतः श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है। यह धातु की बनी है। बाईं ओर की प्रतिमा भी धातु की है। इस प्रतिमा पर प्राचीन लिपि में सं. 744 का लेख है।

जिनालय में वीतरागता आदि गुणों से सर्वज्ञत्व सूचित करने वाली जिन–भगवन्तों की पवित्र प्रतिमाएं हैं। सैकड़ों भव परम्पराओं में उपार्जन किए कठिन कर्म रज के नाश के लिए एवं सम्यगदर्शन, शुद्ध ज्ञान और चारित्र लाभ के लिए हम इन्हें नमस्कार करते हैं।

धरणाशाह (रणकपुर के निर्माता) द्वारा निर्मित राणकपुर तीर्थ की प्रशस्ति में यह स्पष्ट है कि धरणाशाह ने वि.सं. 1496 में पिण्डवाड़ा, अज्जारी के मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।

रंगमण्डप के दाई ओर एक मूर्ति के गादी पर कुँवरपाल श्रेष्ठी के पुत्र रत्ना व धरणाशाह ने वि.सं. 1469 माघ सुदि 6 को दो मूर्तियों की प्रतिष्ठा कराई इससे यह स्पष्ट होता है कि इस मन्दिर के अधूरे कार्य को पूरा करा सं. 1469 में प्रतिष्ठा कराई। मूलनायक परिकर युक्त है, लेकिन परिकर उतना प्राचीन नहीं है जितनी प्रतिमा है। गादी पर प्राचीन घीसा हुआ लेख है सं..... फाल्गुण सुदि 1 (प्रतिपदा) ..... कुँवरपाल भा. कामल दे.....।

इससे यह स्पष्ट है कि सं. 1465 होना चाहिए जैसा ऊपर वर्णन आया है।

मंदिर निर्माण में प्राचीनता दिखाई देती है, मंदिर में स्थापित प्रतिमाएं गुप्तकालीन है जो भिन्न–भिन्न कलाओं से परिपूर्ण है। ऐसी प्रतिमाएं अन्यत्र कम दिखाई देती है।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर महावीर भगवान के मंदिर के पास ही स्थित है। इसका रास्ता महावीर भगवान के मंदिर के द्वार के पास ही है। इसमें मूलनायक गौड़ी पार्श्वनाथ व दोनों ओर विमलनाथ व मुनिसुव्रत भगवान की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। मूलगंभारा के आगे एक चौकी है। दरवाजे की कोट की दीवार पर सं. 1800 का लेख उत्कीर्ण है। दरवाजे के ऊपर गणेश जी की मंगल मूर्ति है। उल्लेखानुसार यह मंदिर वि.सं. 1100 का निर्मित है। मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 2034 में सम्पन्न हुई।

मन्दिर की प्राचीनता के प्रमाणीकरण के लेख :

महावीर भगवान के मंदिर में पीतल की खड़ी काउसग्गीय प्रतिमा का लेख

ऊँ ।। (नीराग) त्वादिभावे न सर्व्वज्ञत्वविभावकं।

ज्ञात्वा भगवतां रूपं जिनानामेव पावनं।।

द्रो (णो) वकयशोदेव देव..... .... रदं क्षेत्रं जैनं कारितं युग्मुत्तमं।।

भवशतपरम्पराज्जितगुरूकर्म्मर .. .. पितदर्शनाय शुद्धसजज्जनचरणलाभाय।।

संवत् 744

मंदिर के सम्भवनाथ भगवान के गभारा में पार्श्वनाथ भगवान की पंचतीर्थी मूर्ति का लेख

सम्भवनाथ भगवान के गभ्भारा में त्रितीर्थी मूर्ति का लेख

संवत्1102 वीरेन (ण) कारिता श्रीमन्नाणकीयगच्छे

सम्भवनाथ भगवान के गभ्भारा में खण्डित परिकर वाली मूर्ति का लेख

सं0 1133 नाणकगच्छे यशोदेवसुतेन वामदेवेन कारितः।

सम्भवनाथ भगवान के गभ्भारा में पार्श्वनाथ भगवान की त्रिमूर्ति का लेख

संवतृ 1141 श्रीनाणकीयगच्छे पासिलसुतेन धीरकस्त्रा(श्रा)वकेण श्रे(यो)र्थं कारिता।

संभवनाथ भगवान के गम्भारा में प्राचीन चतुर्विंशति मूर्ति का लेख

संवत् 1141

वीहिलतनुजश्राघः(द्वः) ज(य)शोवर्द्धन(कः) जशो(यशः)

(अ) चीकरदिमं रूच्यं चतुर्विंशतिपट(ट्ट)कं।।

नव चौकी के दाईं ओर के स्तंभ का लेख

ऊँ।। संवत् 1206 वर्षे श्रावण सुदि 10 गुरौ नाणाव्यव षोषा0 पाला भार्या देमति सुत वोवा पुनचंद्र.....तम तथा स्तंभ(:) कारितः।।

प्राचीन उपाश्रय के पीछे की दीवार पर लेख

सं(0) 1229 श्री.... ....गच्छे.... ....कारिता प्र0 श्री.... ....।

गूढ़मण्डप में एक धातु की मूर्ति का लेख

सं0 1234 आ0 वदि 2 श्रीनाणकीयगच्छे भिरपालसुतेन धरणगेन बिंबं कारित(तं)।

नव चौकी के दाईं ओर की दीवार पर लेख

ऊँ।। ऊँ नमः श्रीवर्द्धमानाय।।

प्राग्वाटवंशे व्यवहारिसांगासूनुः प्रसूनोज्जवलकांतकीर्त्तिः।
श्रीपुण्यपूणोऽजनि पूर्णसिंहस्तस्य प्रिया जाल्हणदेविनाम्नी।।1

(?)तदूरचंद्रास्ततरूदम क्रियाकलापः किल कुंरपालः।
जायाधर्ममोदिकलहप्रमुक्ता ( ) तस्याभवत्कामलदेविनाम्नी।।2

सूदयौ सदयौ वामनृ(म)तैः सुहितौ लोकहितौ सतां मतौ।
सनयौ विनयौचितीचणौ विजयेते तनयौ तयोरिमौ।।3।।

तत्राद्यः सज्जनश्रेणीरत्नं रत्नाभिधो धनी।
वदान्यजन ( ) मुर्द्धन्यो राजमान्यो श्रियां निधिः ।।4।।

द्वितीयस्तु द्वितीयेदुकांतिकांतगुणावयः (हः)
धरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्यकर्मणि।।5।।

रत्नादेवीधारलदेव्यौ जन्यौ (पत्न्यौ) तयोरनुक्रमतः।
समभूतामतिनिर्मलशीलालंकार ( ) धारिण्यौ।।6।।

मन(रत्न)स्य पुता(त्रा)एते लाषासलषासजाह्नसोनाख्याः।
शांतस्वभावकलितागुणतरूमलयाः कलानिलयाः।।7।।

।।इतश्च।।

श्रीप्राग्वाटाभिधज्ञातिश्रृंगश्रृंगारशेखरः।
पूराभून्महुणानामा व्यवहारी वरस्थितिः।।8।।
( )तस्य जोलाभिधः सूनुस्तत्पुत्रो भावठोऽशठः।
तस्यासीज्जउणादेवी भार्याचार्या स्वभावतः।।9।।
तदीयपुत्रः सुगुणैः पवित्रः
स्वा(सौ)जन्यवि(चि)त्तः सुनयाप्तवित्तः।
लींबाभिधानः सुकृतिप्रधानः
सत्कार्यधूर्योय(व्य)व ( )हारवर्यः।।10।।
नयणादेवीनामलदेवीति ख्यातसंज्ञिक(के)तस्य।
दयिते दययोपेते शीलाद्युद्दामगुणकलिते।।11।।
नयणादेवीतनुजो मनुजोचितचारूलक्षणोपेतः।
अमरो भ्रमरो गुरूजनजन्नी(नी)जनका( )दिपदकमले।।12।।
भीमकांतगुाख्याते प्रजापालनलालसे।
हाजाभिधे धराधीशे प्राज्यराज्यं चरीकु(करी)ति।।13।।
आभ्यामुभाभ्यां धनिकुंरपाल लींबाभिधाभ्यां सदुपासकाभ्यां।
ग्रामेऽग्रिमे पींडरवाटकाख्ये प्रासाद( )भूमिरुदधारि सारः।।
विक्रमाद्धाणतर्क्काब्धिभूमिते (1465)वत्सरे तथा।
फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तिथौ।15
कल्याणवृद्धयभ्युदयैकदायकः श्रीवद्धमानश्चरमो जिनेश्वरः।( )
श्रीमत्तपःसंयमधारिसूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्टमहामहादिह।।16।।
आरवींदुसमयादनया श्रीवर्द्धमानजिननायकमूर्त्या।
राजमानमभिनंदतु विश्वानंददायकमिदं वर ( )चैत्यं।।17।।

गूढ़मण्डप के दाईं ओर की मूर्ति के गादी का लेख

सं0 1469 वर्षे माघ शुदि 6 प्राग्वाट कुंयरपाल भा0 कामलदेसुत सं0 रत्नधरणाभ्यां स्वकुटुंब.... ....

मूलनायक महावीर भगवान के गादी का लेख

सं0.... ....फा0 शु0 1 प्राग्वाट.... ....कुरपालेन भा0 कामलदे....

मंदिर के चौक के भोयरे के अंदर के स्तंभ का लेख

संवत् 1538 वर्षे ज्येष्ट वदि 13 सा0 पीचा भाज्या(र्या) माठ प(पु)त्र भाडा सामा.... ....

भायेरा में रखी खण्डित मूर्ति का लेख

ऊँ।। सं0 1550 पोस शुदि 15 दिने सा0 सहजा भार्या पोमी कारितं।

मंदिर के श्री पद्मप्रभ भगवान के गभारा से आंगन के जाते पहली डेरी के बारसांत का लेख

।।ऊँ।। संवत् 1603 वर्षे महा वदि 8 शुक्रे श्रीसीरोहीनगरे रायि(य)श्रीदूजणसलजी विजि(जयि)राज्ये प्रगवंशे कोठारी छांछा भार्या हांसलदे पुत्र कोठारी श्रीपाल भार्या षेतलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राजपाल रतनसी रामदास श(स)हसकर्ण बाई लाछलदेश्रेयोर्थं पींडरवाडाग्रामे श्रीमा(म)हावीरप्रासादे देहरी कारापिता श्रीतपागछे(च्छे) श्रीहेमविमलसूरित(स्त)त्पट्टे श्रीआणंदविमलसूरित(स्त)त्पट्टे श्रीविजि(जय)दानसूरि(:)शुभं भवतु कल्याणमस्तु श्रा बा(0) लाछलदेश्रेयो(र्थं)।

डेरी नं. 2 के बारसात का लेख

।।ऊँ।। संवत् 1603 वर्षे महा वदि 8 शुक्रे श्रीसीरोहीनगरे रायि(य)श्रीदूजणसलजी विजि(जयि)राज्ये प्रगवंशे कोठारी छांछा भार्या हांसलदे पुत्र कोठारी श्रीपालभार्या षेतलदे लाछलदे संसारदे पुत्र कोठारी तेजपाल राजपाल रामदास श(स)हसकर्ण पीडरवाडाग्रामे श्रीमहावीरप्रासादे देहरी कारापिता कोठारी तेजपालश्रेयोर्थं श्रीतपागछे(च्छे) श्रीहेमविमलसूरित(स्त)त्पट्टे श्रीआणंदविमलसूरित(स्त)त्पट्टे श्रीविजि(जय)दानसूरि(:)शुभं भवतु कला(ल्या)णमस्तु ।।

डेरी नं. 3 के बारसात का लेख

।।ऊँ।। संवत् 1603 वर्षे महा वदि 8 शुक्रे श्रीसीरोहीनगरे रायि(य)श्रीदूजणसलजी विजि(जयि)राज्ये प्रगवंशे साहा गोयंद भार्या धनी पुत्र? केल्हा भार्या चांपलदे गुरादे पुत्र जीवाजिणदास केल्ला पींडरवाडाग्रामे श्रीमा(म)हावीरप्रासादे देहरी कारापिता श्रीतपागछे(च्छे) श्रीकमलकलस(श)सूरित(स्त)त्पट्टे श्रीविजि(जय)दानसूरि(:) सा(0) जीवाश्रेयोर्थं सा0 जीवादिने 40 अणसण सीधा संवत् 1602 वर्षे फागुण वदि 8 दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्याणमस्तु।

डेरी नं. 4 का लेख

।।ऊँ।। संवत् 1603 वर्षे महा वदि 8 शुक्रे श्रीसीरोहीनगरे रायि(य) श्रीदूजणसलजी विजे(जयि)राज्ये प्रगवंशे साहा वाछा भार्या गांगादे पुत्र सा कर्मा भार्या कसमीरदे पुत्री रमी पींडरवाडाग्रामे श्रीमा(म)हावीरप्रासादे देहरी का(रा)पित(ता) बाई गांगादेश्रेयोर्थं श्रीतप(पा)गछे(च्छे) श्रीकमलकलशसूरि(:) शुभं भवतु कल्याणमसतू(स्तु)।।

डेरी नं. 5 का लेख

।।ऊँ।। संवत् 16S12 वरषे(र्षे) फागुण वइद (वदि) 11 शुक्रे श्रीसीरोहीनगरे मा(म)हाराय उदईसंघजीवजे(विजयि)राज्ये प्रगवंशे कोठारी छांछा भारिया(र्या) हसलदे पुत्र कोठारी श्रीपाल भारजा(र्या) लाछलदे पुत्र रामदास रतनसी सहसकरण बाई गुरांदे श्रीयथं (श्रेयोर्थं) पीडरवाडाग्रामे श्री महावीरप्र(प्रा)सादे देहरी क(का)रापत(पिता) श्रीतपां(पा)गच्छे श्रीहेमवी(वि)मलसूरीत(रिस्त)त्पट्टे श्रीआणंदवी(वि)मलसूरी त(रिस्त)त्पट्टे श्रीवजे(विजय)दानसूरि(रि:) श्रीश्री।।

डेरी नं. 9 का लेख

।।ऊँ।। संवत् 16S12 वरषे(र्षे) फागुण वइद (वदि) 11 शुक्रे श्रीसीरोहीनगरे मा(म)हाराय उदईसंघजीवजे(विजयिराज्ये) प्रगनत्र(वंशे) कोठारी छछा भारजा(र्या) हंसलदे पुत्र कोठारी श्रीपाल भारजा(र्या) लाछलदे तछ(स्य)पुत्र कोठारी रामदास रतनसी सहसकरण बाई गुरांदे श्रीयथ(श्रेयोर्थं) पीडरवाडाग्र(ग्रा)मे श्रीमाह(महा)वीरप्र(प्रा)सादे देहरीई बाईई लक्ष्मी करावी श्रीतपागछे(च्छे) श्रीहेमव(वि)मलसरत(सूरिस्त)त्पट्टे श्रीआणंदव(वि)मलसूरी त(स्त)त्पट्टे श्रीविजे(जय)दानसूरि(रिः) श्रीश्री।।

मंदिर के पीछे सम्भवनाथ भगवान की मूर्ति का लेख

संवत् 1653 वर्ष माघ शुदि 14 दिने सा0 पंचायण ना0 जसमादे पुत्र सा0 वीरम वाछाः फलादिकुटुंबेन स्त्रश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्र0 श्रीतपागच्छाधिराज श्रीहीरविजयसूरि पट्टालंकारहारश्रीविजयसेनसूरिभिः ।।श्रीः।।

श्री पार्श्वनाथ का शिखरबंद मंदिर के मुख्य दरवाजा बाहरी दीवार पर लेख (बाएं)

सं(0) 1871 ना फागुण वद(दि) 3 द(दि)ने कमाड कीघां पं। तेजविजय चेला जयविजय पाता सरदेवे करावीउ सूत्रधार नाथुजी सीरोहीवाला.... ....

श्री महावीर भगवान का मंदिर का उपाश्रय में सिद्धचक्र पर लेख

....वर्षे आ0 शु0 1 विदिने अजाहरीवास्तव्यसमस्तश्रीसंघम(घेन) स्वरेयो(र्थं) कारित(तं) श्रीसिद्धचक्रयंत्र(त्रं) तपारीसोमसुंदरसूरीश्वराणामुपदेशेन।।

।। संवत् 1088

महत्तमेन चच्चेन (नीराग) सज्जनेन च कारितम्।

श्यामनागतनयेन बिंबं पुण्याय श्रद्धया।। कोरिण्टकवृहच्चैत्ये श्रावकेण सुधीमता।

सूर्याचंद्रमसौ यावन्नंदतां जनपूजितं।।

अपील

सिरोही जिले में सर्वाधिक मंदिर विद्यमान होने से एक ही मार्ग पर कई बार आना-जाना होना स्वभाविक है उसके फलस्वरूप कुछ एक मंदिरो की मार्ग के अनुसार एक सिलसिलेवार सेट नहीं हो पाए है।

अतः पाठकों से आग्रह है कि दशनार्थ जाने के पूर्व मंदिर की स्थिति व नक्शा को अवश्य अवलोकन करे जिससे यात्रा करने पर कठिनाई नहीं आवे।

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर सफेद सुन्दर पाषाण का बना हुआ है। जालीदार मुख्य दरवाजा सुरक्षा की दृष्टि से प्रायः बंद रहता है, दरवाजे के ऊपर कलात्मक तोरण बना हुआ है। सभा मण्डप में गौतम स्वामीजी व सिद्धचक्र पट्ट यक्ष-यक्षिणी की व अन्य तीर्थंकर की प्रतिमाएं स्थापित है। वैराग्य वारिधि आचार्य देवेश श्री कुलचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के परिवारजन श्री संघवी रिखबचंदजी अमीचंदजी मेहता परिवार द्वारा बनाया गया है। मूलनायक के दोनों ओर श्री कुंथुनाथ भगवान की प्रतिमा स्थापित है।

श्री शत्रुंजय तीर्थ व सचित्र प्रेमसूरीश्वर जीवन परिचय पट्ट मंदिर, पिण्डवाड़ा

यह मंदिर (शत्रुंजय चित्र पट्ट) बड़ा विशाल हैं तथा कर्मसाहित्य निष्णात संयत तप त्याग की तपोमुर्ति आचार्य देवेश श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के दीक्षा जीवन के सचित्र पट्ट सम्पूर्ण भारत में मात्र पीण्डवाड़ा में ही है, अवश्य दर्शनार्थ पधारें, यह वही भूमि है जहाँ पर आचार्य देवेश श्री ने वि.सं. 2020 में तपागच्छ श्री संघ की एकता हेतु अपवादिक पट्टक बनाया था।

सिद्धान्त महोदधि आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. का गुरू मंदिर

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान के पीछे की ओर विशाल शत्रुंजय पट्ट बना हुआ है और पट्ट के पीछे गुरू मंदिर व तीर्थों के चित्र है। बाहर उपाश्रय और प्रवचन हॉल है तथा उसके उपर बालकनी में विशाल ज्ञान भण्डार है।

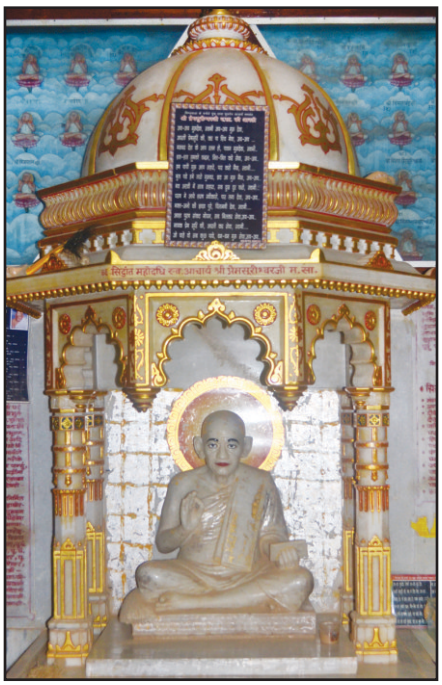

पीण्डवाड़ा स्थित उक्त सभी मंदिरों की देखरेख सेठ कल्याणजी सौभाग्यचन्द जैन पेढ़ी द्वारा की जाती है इसके अध्यक्ष श्री मूलचंद जी है जो अस्थायी रूप से सूरत में निवास कर रहे हैं । सम्पर्क सूत्र : 09375112295, श्री मनीषभाई मनमोहित रेडिमेड (सम्पर्क सूत्र : 09352793937)

पीण्डवाड़ा में धर्मशाला, भोजनशाला, अतिथि गृह, आयम्बिलशाला

आचार्यश्री आवश्यक सामग्री

संचालित है तथा नूतन भोजनशाला जो लालचंदजी छगनलालजी द्वारा निर्मित है उनके द्वारा ही संचालित है तथा साधर्मी भक्ति का उच्च कोटि का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

श्री सीमन्धर स्वामी (विहरमान) का मंदिर, पिण्डवाड़ा

यह शिखरबंद मंदिर गाँव के न्यू स्ट्रीट (नई सहरी) में सड़क के किनारे स्थित है। मंदिर में कांच की जड़ाई भी की है। यह मंदिर करीब 35 वर्ष प्राचीन है। जिसकी प्रतिष्ठा वि. सं. 2035 वैशाख सुदी 6 को सम्पन्न हुई । यह मंदिर शा समरथमलजी (भगत) सागरमलजी रायचंदजी राठौड़ परिवार द्वारा बनवाया गया।

सभामण्डप में यक्ष–यक्षिणी की प्रतिमा स्थापित है। मूलनायक के दोनो ओर श्री कुंथुनाथ व श्री महावीर भगवान की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर की देखरेख स्थानीय पेढ़ी द्वारा की जाती है। एक विशाल व प्राचीन ज्ञान भंडार तथा पौषधशाला भी बाजार के बीच एक परिवार की देखरेख में निर्मित हुई । सभी ये उपयोग में आ रही है। पौषधशाला का नाम शा. श्री रायचंदजी हंसराजजी पौषधशाला व ज्ञान मंदिर का नाम आचार्यदेव श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. के नाम से है।

श्री सम्भवनाथ भगवान का मंदिर, पिण्डवाड़ा

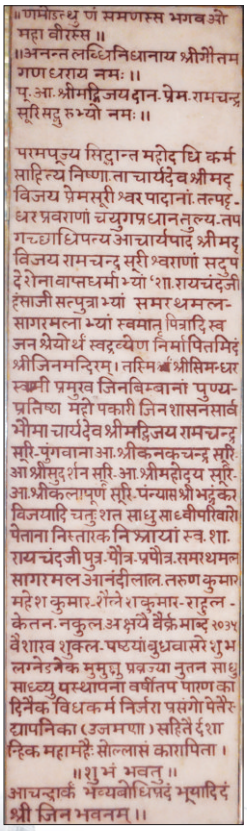

॥णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ
महा वीरस्स ॥
॥अनन्त लब्धिनिधानाय श्रीगौतम
गणधराय नमः ॥
पू.आ. श्रीमद्विजय दान-प्रेम-रामचन्द्र
सूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

परमपूज्य सिद्धान्त महोदधि कर्म
साहित्य निष्णाता चार्यदेव श्रीमद्
विजय प्रेमसूरीश्वर पादानां तत्पट्ट-
धर प्रवराणां चयुगप्रधान तुल्य-तप
गच्छाधिपत्य आचार्यपाद श्रीमद्
विजय रामचन्द्र सूरीश्वराणां सदुप
देशेनावाप्तधर्माभ्यां 'शा.रायचंदजी
हंसाजी सत्पुत्राभ्यां समरथमल-
सागरमलाभ्यां स्वमातृ पित्रादि स्व
जन श्रेयोर्थं स्वद्रव्येण निर्मापितमिदं
श्रीजिनमन्दिरम्। तस्मिन् श्रीसिमन्धर
स्वामी प्रमुख जिनबिम्बानां पुण्य-
प्रतिष्ठा महोपकारी जिन शासनसार्व
भौमाचार्यदेव श्रीमद्विजय रामचन्द्र
सूरि-पुंगवाना आ. श्रीकनकचन्द्र सूरि-
आ श्रीसुदर्शन सूरि-आ. श्रीमहोदय सूरि-
आ. श्रीकलापूर्ण सूरि-पंन्यास श्री भद्रंकर
विजयादि चतुःशत साधु साध्वीपरिवारो
पेताना निस्तारक निश्रायां स्व. शा.
रायचंदजी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र. समरथमल
सागरमल आनंदीलाल. तरुण कुमार
महेश कुमार-शैलेशकुमार-राहुल -
केतन. नकुल. अक्षयै वैक्र‌माब्दे २०३५
वैशाख शुक्ल-षष्ठयां बुधवासरे शुभ
लग्नेऽनेक मुमुक्षु प्रव्रज्या नुतन साधु
साध्व्युपस्थापना वर्षीतप पारण का
दिनैक विधकर्म निर्जरा प्रसंगो पेतैरु
द्यापनिका (उजमणा) सहितै र्दशा
ह्निक महामहैः सोल्लासं कारापिता।
॥शुभं भवतु॥
आचन्द्रार्कं भव्यबोधिप्रदं भूयादिदं
श्री जिन भवनम्॥

यह शिखबंद मंदिर श्री प्रवीणकुमार मगनलालजी जैन ने स्वद्रव्य से निर्मित कराकर प्रतिष्ठा करवाई जिसका शिलालेख इस तरह से विद्यमान है।

मंदिर में आचार्यदेव गुरू श्री प्रेमसूरिजी म.सा. व आचार्य देवेश श्री रामचन्द्रसूरिजी म.सा. की गुरूमूर्ति स्थापित है। जिसकी प्रतिष्ठा आचार्य श्री कनकचन्द्र सूरि जी म.सा., आ. श्री सुदर्शनसूरि जी व आ. श्री कलापूर्ण सूरि जी, आचार्यदेव श्री महोदयसूरिजी आदि की निश्रा में सम्पन्न हुई।

श्री नमिनाथ भगवान का मंदिर, सिरोही रोड़

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही रोड़ रेल्वे स्टेशन के पास धर्मशाला परिसर में स्थित है। मूलनायक के दोनों ओर श्री वासूपूज्य व श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा है। इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि स. 2016 में सम्पन्न हुई वर्तमान में नूतन रूप से जीर्णोद्धार हुआ है मंदिर के साथ धर्मशाला बनी हुई है।

इस मंदिर की वार्षिक ध्वजा वैशाख शुक्ला 6 को चढ़ाई जाती है। स्टेशन के पास ही एक धर्मशाला व गाँव में एक, कुल दो धर्मशालाएँ है। धर्मशाला के पास भोजनशाला की सुविधा उपलब्ध है। यह मंदिर धर्मशाला निर्माण का लाभ शा. खुबचंदजी अचलचंदजी व रतनचंदजी हीराचंदजी परिवार द्वारा बनवाया गया व प्रतिष्ठा कर्म साहित्य निष्णात आचार्यदेवश्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा सम्पन्न हुई । इन मंदिरों की देखरेख स्थानीय जैन श्वेताम्बर पेढ़ी द्वारा की जाती है। सम्पर्क सूत्र : 02971–220028

श्री जिनेश्वर भगवान का मंदिर, बसंतगढ़

सिरोही रोड़ स्टेशन से 5 व अजारी से 4 किलोमीटर दूर स्थित है। स्थानीय लोगों में वातपरागढ़ का अपभ्रंश है। यहां पर वि.सं. 682 का शिलालेख उपलब्ध हुआ जो मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने यहां की पहाड़ियों पर गढ़ (किला) बनाया था, वहां पर यह लेख मिला। यहाँ की एक पहाड़ी पर क्षेमकरी नामक देवी का मंदिर श्री सत्यदेव नामक व्यक्ति ने वि.सं. 682 में बनाया था। बाद में जीर्णोद्धार कराने पर वह मिट्टी में मिल गया।

यह मंदिर जब बना उस समय यह क्षेत्र राजा वर्मलात के अधिकार में था, यह राजा किस वंश का था स्पष्ट नहीं हुआ लेकिन ब्रह्मगुप्त पुत्र जिष्णु ने वि.सं. 685 में "स्फुट आर्य सिद्धांत" नामक ग्रंथ की रचना की, उसमें उस समय चाय (चावड़ा) वंशीय व्याघ्र मुख नामक राजा था, यह संभव हो सकता है कि व्याघ्रमुख उक्त वर्मलात का पुत्र हो।

राजा वर्मलात का मुख्यमंत्री सुप्रभदेव था जो वर्मलात वि.सं. 682 का समय है, विद्यमान था। दूसरा, लेख वि.सं. 1099 का मिला है जो परमार राजा पूर्णमाल के समय का जो आबू के परमार वंश की सूची में सम्मिलित है। राजा पूर्णमाल की बहिन लोहिनी का विवाह राजा विग्रहराज से हुआ। लोहिनी ने यहां सूर्य मंदिर बनाया व बावड़ी बनवाई। जिसका नाम लालबाव (लोहिनी बाजी) कहलाती है। जिस पर यह लेख लगाया गया था जिस पर वष्ठिपुर, वटपुर का उल्लेख है क्योंकि यहां उस समय वट वृक्ष का घना क्षेत्र था, यह भी संभव है वष्ठिपुर से बसन्तपुर पड़ा हो, यहीं पर एक

ब्रह्म की बड़ी मूर्ति भी है जो बटेश्वर महादेव का मंदिर कहलाता है। एक जैन मंदिर के खुदाई करने पर यहां पर वि.सं. 1507 माघ सुदि 11 का लेख मिला जो महाराणा कुंभा के समय का है यहां पर कई धातु की बड़ी व छोटी मूर्तियां भी प्राप्त हुई जो पिण्डवाड़ा व अन्य मंदिरों में स्थापित है। गुजरात के सुल्तान के आक्रमण मे कई तालाब,

मंदिर, नष्ट कर दिए, वर्तमान में यह स्थान उजाड़ हो गया है।

पूर्व में प्रत्येक जाति की घनी बस्तियां थी, आक्रमण के कारण वे अन्यत्र जाकर बस गए।

मंदिर की प्राचीनता का प्रमाणीकरण का लेख

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्ति पर, आसन के दोनो तरफ पीठ पर)

सं० 1507 वर्षे माघ सुदि 11 वुधे राणा श्री कुंभ कर्ण राज्ये बसंत पुर चैत्ये तदुद्धार कारको प्राग्वाट व्य० झगड़ा भा० मेघादे पुत्र व्य० माणिक दे पुत्र कान्हा पौत्र जोणादि युतेन प्राग्वाट व्य० धणसी भा० लींवी पुत्र व्य० भादाकेन भा० आल्हू पुत्र जावडेन भोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोम सुन्दर सूरि तत्पट्टालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पट्टं प्रतिष्ठित गच्छाधिराज श्री रत्न शेषर सूरि गुरुभिः।

जैन मंदिर के खण्डित परिकर की गादी पर का लेख

——————————वीरणस पुत्रेण आसरेण

सुधीमता प्रतिमा क(घ)र प्रतिस्थे गच्छे

श्री न भासूरीणां भुवने आदि देवस्थान

—————————— रिल श्रीवटस्थाने स्थापित।

पूर्ण्ण दिव्या समं शुभां सापि श्री नभसूरिभिः

प्रतिष्ठिता

जैन मंदिरों की छः चौकी के बाईं ओर स्तंभ पर

ऊँ। संवत् 1675 वर्षे तपागच्छभट्टारक पुरंदर भट्टारक श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री तिलकसूरि विजय के राज्य में महोपाध्याय श्री 5 श्री सोम विजय गणि शिष्य पंडित श्री अमृतविजयगाणि नेम विजय मु. कनकविजय चवराडिया नगरे चोमासुं रहीया श्री श्री शांतिनाथ का कृता ——————— जिनालय कारिता।

श्री जैन सरस्वती देवी का मंदिर, मार्कुण्डेश्वर

यह मंदिर सिरोही रोड़ रेल्से स्टेशन से 8 किलोमीटर व अजारी गांव से 3 किलोमीटर दूर स्थित है। यह सरस्वती देवी की मूर्ति श्वेत पाषाण की 49'' ऊँची है।

यहाँ पर मार्कुण्डेश्वर मंदिर अति प्राचीन है। इसी परिसर में अति प्राचीन (संभवतया गुप्तकालीन) सरस्वती देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा करीब 49'' ऊँची है। इस देवी की प्रधानता, प्रभाविकता देश विख्यात है। इसी देवी की साधना श्री मानतुंगसूरि जी, श्री हेमचंद्राचार्यजी, योगाचार्य श्री शांतिसूरीश्वर जी ने की थी, साधना से देवी ने श्री हेमचन्द्राचार्य को दर्शन दिये थे, इसी प्रकार श्री शांतिसूरिजी को धूपदानी में प्रगट होकर दर्शन देकर आशीर्वाद दिया जिसके फलस्वरूप वे अशिक्षित होते हुए भी उन्हें विश्व की सभी भाषाओं का ज्ञान था।

देवी प्रतिमा के आगे आचार्य श्री हेमचंद्राचार्य के चरणपादुका स्थापित है। यहां पर घिसाा हुआ लेख भी है। अमरत्व प्राप्त करने वाले महर्षि मार्कुण्डेय की तपोभूमि रही है तथा कवि कालीदास की भी जन्मस्थली है। सरस्वती देवी का मंदिर कितना प्राचीन है, यह तो स्पष्ट नहीं है लेकिन मंदिर व प्रतिमा की बनावट, अन्य जानकारी के आधार पर गुप्तकालीन होना पाया जाता है।

यहाँ पर जैन व अजैन अन्य लोग स्वयं व अपनी संतान की पढ़ाई में कमजोर होने से दर्शन करने आते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आशीर्वाद प्राप्त करते है। जानकारी यह भी प्राप्त हुई है कि यह सरस्वती देवी की प्रतिमा जैन शैली की है लेकिन वर्तमान में इसका संधारण जैनों के पास नहीं हैं। सरस्वती देवी के मंदिर के बाहर एक छोटे पत्थर पर उत्कीर्ण लेख है जिस पर स. 99 उत्कीर्ण है।

यह सत्य है कि सरस्वतीदेवी का मंदिर, प्रतिमा गुप्तकालीन है लेकिन प्राचीनता की ओर अधिक प्रमाणिकता के लिए सरस्वती देवी के मंदिर के पास स्थित बावड़ी में वि.सं. 1202 का लेख है। जिसमें परमार राजा यशोधवल का उल्लेख है तथा गाँव में गोपालजी का मंदिर है जिसमें सोलंकी राजा अर्जुनदेव का सं. 1320 का लेख है। बाईं ओर की प्रतिमा पर घीसा हुआ लेख है।

भौतिकता का आवरण :

इसमें अर्थ का बोलबाला संकुचित भावना, सत्ता अधिकार का पर्याय बन गया है। इस बात को आज भुजबल, माफिया, तस्करी, हत्या, ब्लात्कार, द्वेष, ईर्ष्या का वातावरण बढ़ता जा रहा है। जब अपनी सजा के सामने ईश्वरीय शक्ति कम लगने लगती है तब कोई न कोई महापुरूष प्रकट होता है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर, अजारी

यह शिखरबंद बावन जिनालय का मंदिर सिरोही रोड़ रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य स्थित है। मंदिर में प्रवेश करते समय दाईं ओर प्रतिष्ठित सरस्वती देवी की प्रतिमा वि.सं. 1269 का लेख है और धातु प्रतिमाओं पर 11वीं व 12वीं शताब्दी का लेख है। मूलनायक के दाईं ओर स्थापित प्रतिमा वि.सं. 1243 वैशाख शुक्ला का लेख है इसी प्रकार मूलनायक के पीछे स्थापित श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिमा पर वि.सं. 1523 का लेख उल्लेखित है। इस प्रतिमा के दोनों ओर स्थित चतुर्विंशति प्राचीन है। जिसमें से एक पर सं. 1243 का लेख है। मंदिर के पास एक बावड़ी है जहां पर परमार वंशीय राजा यशोधवल के समय का वि.सं. 1202 का लेख है, चन्द्रावती के राजा रणसिंह के समय का वि.सं. 1223 का तथा परमार वंशीय राजा धारावर्ष का है प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त गोपाल जी का मंदिर है जो प्राचीन है उसके पास एक पत्थर पर बाघेल (सोलंकी) के राजा अर्जुनदेव के समय वि.सं. 1320 का लेख है प्राप्त हुआ है अत: यह मंदिर 12 वी शताब्दी के पूर्व का है। यह मंदिर इससे भी प्राचीन है अत: 11वीं शताब्दी का बना होगा।

गूढ़मण्डप के प्रवेश द्वार के दोनो ओर आचार्य श्री सुमतिप्रभ सूरि जी व श्री महेन्द्रसूरि जी की सुंदर व कलात्मक प्रतिमाएं है। फेरी में भी कई प्रतिमाएं कलात्मक है। ये प्रतिमाएँ शिल्पकला की दृष्टि से प्राचीन है। कोई प्रतिमा आम के नीचे तो कोई अशोक वृक्ष के नीचे व अन्य वृक्ष के नीचे (जो

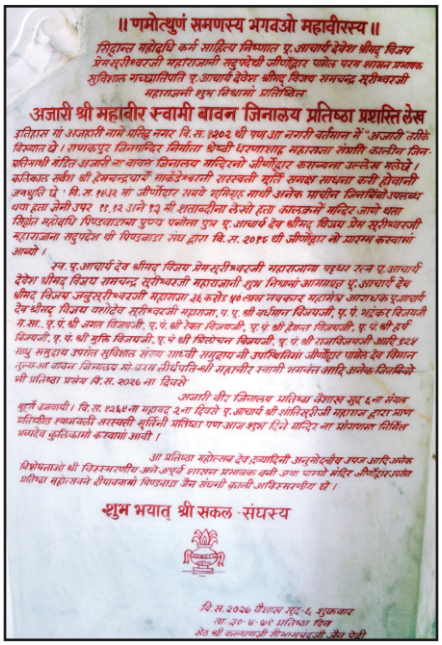

उत्कीर्ण है) है ऐसी प्रतिमाएं अन्यत्र दिखाई नहीं दी। करीब 50 धातु मुर्तियाँ थी। जिसमें अधिकतर मुर्तियों पर 11 वीं व 12वीं शताब्दी के लेख है जो वर्तमान में पिण्डवाड़ा में संरक्षित है जिसमें कुछ के लेख नीचे दिए है।

सं. 1269 वर्ष श्री सण्डेरगच्छ मातृ श्रेयार्थ पुत्र पद्म सिंह तत भातृ श्री हाकेन रत्नपाल नामक सहितेन श्री सरस्वती बिंब कारितं प्रतिष्ठितम् श्री शांतिसूरिभिः। माघ वादे 3 शनौः।

एक प्रतिमा अति सुंदर है जिस पर वि.सं. 12 का लेख है मंदिर का अंतिम जीर्णोद्धार आचार्य श्री रामचंद्र सूरि जी म.सा की निश्रा में सम्पन्न हु आ।

यहां पर हेमचन्द्राचार्य जी म.सा. ने पास में मार्कण्डेश्वर मंदिर में सरस्वती देवी की मंदिर में स्थापित सरस्वती देवी के मंदिर के पूर्व में किया है और इसकी स्थापना भी सर्वज्ञ कलिकाल श्री हेमचंद्राचार्यजी म.सा. ने ही कराई थी जो आज भी विद्यमान है। इस मंदिर में सरस्वती देवी की प्रतिष्ठा वि.सं. 1269 में श्री शांतिसूरि जी म.सा. द्वारा करवाई।

इस 52 जिनालय की कला अति प्रसिद्ध है।

मूलनायक पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है यह प्रतिमा सम्प्रति–कालीन है। मंदिर में स्थापित प्रतिमाएं अधिकतर सम्प्रतिकालीन हैं।

मंदिर विशाल परकोटे के भीतर बना हुआ मुख्य दरवाजा झालीदार है। मंदिर में मुख्य प्रवेश द्वार आकर्षक व कलात्मक है। मंदिर के चारों ओर देवरियाँ बनी हुई हैं। जिन पर शिखर बने हुए है। मंदिर में प्रवेश के दाईं ओर एक सुंदर आकर्षक देवरी में श्री सरस्वती देवी की कलात्मक व आकर्षक प्रतिमा स्थापित है। यह प्रतिमा कसौटी के पाषाण की है तथा मंदिर की फेरणी में स्थापित थी जिसको बाहर नूतन देवरी बनाकर स्थापित की। मंदिर में छः चौकी, सभामण्डप, रंगमण्डप, श्रृंगारचौकी, सुंदर गुम्बज बने हुए हैं।

विशेष : मूलनायक का परिकर कलात्मक व आकर्षक है। छः कल्पवृक्ष बने हुए हैं।

मंदिर के साथ धर्मशाला व भोजनशाला उपलब्ध है लेकिन भोजन का आदेश देने पर ही व्यवस्था होती है।

मंदिर की देखरेख श्री सेठ कल्याणजी सौभागचन्द जी पेढी पीण्डवाड़ा द्वारा की जाती है, सम्पर्क : 02971–220028, मोबाइल : 07599082182

मंदिर की प्राचीनता का प्रमाणीकरण का लेख

मंदिर के त्रितीर्थी की मूर्ति का लेख

संवत् 1018 वैशा(शा)खा सुदि 4 वाह.... ....

मूलनायक श्री महावीर भगवान के गभारा में धातु की सरस्वती देवी की मूर्ति का लेख

संवतृ 1092 फाल्ग(ल्गु)न सुदि 9 रवौ श्रीनिवृ(वृ)तककुले श्रीमदाम्रदेवाचार्यगच्छे नंदिग्रामचैत्ये सोमकेन जाया.... ....सहितेन तत्सुतसहजुकेन च निजपुत्रसंवीरणसहिलान्वितेन नि(:)श्रेयसे वृष्ज्ञभजिनप्रतिमा–वार्थ(?) कारिता।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति का लेख

श्रीनागरगच्छे वेन्नल्लासुतवंभेन संवत् 1118।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की त्रितीर्थी मूर्ति का लेख

श्रीवायटीयगच्छे आसणागसुतेन अभयकुमारेण तसै–(स्यै)व व(ध)र्माय कारितेयं।। सं.(0) 1129।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की त्रितीर्थी मूर्ति का लेख

श्रीनन्नाचार्यगच्दे दोदायावक (चके)न कारिता सं(0) 1140।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की त्रितीर्थी मूर्ति का लेख

सं(0) 1158 अंपकवर जसमति कारिता मालकगच्छे।।

श्री पार्श्वनाथ की धातु की मूर्ति का लेख

सं(0) 1160 जे(ज्ये)ष्ठ व(0) 2 तलहेन कारापिता।।

धातु की मूर्ति का लेख

फनाश्रावकेण वैद्यपासरनिमित्तं प्रतिमा कारिता।। सं.ग) 1162।

त्रितीर्थी मूर्ति का लेख

सं.(0) 1168 ज्येष्ठ व(0) 3 श्रीव्रह्माणगच्दे श्रीआम्रदेवसूरिस.... ....दादा पासरिक कवडि पाजा अभयकुमार वीरदेव प्रभृतिपुत्रैर्व्यव्हर(हारि)क पितृव्रह्मनिमित्ते कारिता।

एक तीर्थी की मूर्ति का लेख

सं(0) 1194 वै(0) सु(0) 9 श्रीऊकेशगच्छे पापणाभार्या पहुदेव्या कारिता।

एक तीर्थी की मूर्ति का लेख

ऊँ।।संवत् 1194 वर्षे श्रीजिनचंद्रसूरिसंताने अजितस्वामिप्रतिमा अजितश्रेयोर्थं कारिता।।

धातु की एक मूर्ति का लेख

सं(0) 1200 वैसा(शा)ख सू(सु) दि... स(श)नौ सां(शां)तिस्त्रावी(श्रावि)का क(का)रापी(पि)ता।।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, जनापुर

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही रोड़ रेल्वे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 800 वर्ष प्राचीन है। यह मंदिर जीर्ण-शीर्ण होने से जीर्णोद्धार कराया जा कर मार्बल का कार्य करवाया गया है। मंदिर में नक्काशी का कार्य किया हुआ है। यहां पर संघ का उपाश्रय आदि प्रोपर्टी भी है।

मंदिर की देखरेख पिण्डवाड़ा पेढ़ी द्वारा किया जाता है। सम्पर्क सूत्र : 09352793937 (मनीष भाई)3

सिरोही रोड़ से नांदिया के सीधे रास्ते पर जनापुरा स्थित है, सिरोही रोड़ से 4 किमी दूर है।

मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान पर लेख

संवत् 1297 वर्षे श्रीरि(ऋ)षभदेव ....

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, झाड़ोली

यह विशाल शिखरबंद मंदिर सिरोही मुख्यालय से 21 व सिरोही रोड रेल्वे स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर मुख्य सड़क से कुछ दूरी पर गाँव के मध्य में स्थित है। गाँव का प्राचीन नाम ''झाड़वली' होने का उल्लेख है। अपभ्रंश होकर झाड़ोली के नाम से पुकारा जाता है।

यह मंदिर 1000 वर्ष प्राचीन होना पाया जाता है। वि.सं. 1234 एवं 1236 के शिलालेख उपलब्ध है।

चन्द्रावती नगरी के राजा परमार धारावर्ष के मंत्री नागड़ के द्वारा जीर्णोद्धार कराने का उल्लेख शिलालेख में आता है। इसके अतिरिक्त वि.सं. 1255 में राजा धारावर्ष की पत्नी शृंगारीदेवी ने एक बावड़ी व बगीचा मंदिर को भेंट किया ऐसा उल्लेख है। यह बावड़ी आज भी विद्यमान है। इस बावड़ी को ''देव बावड़ी'' कहा जाता है। अब बावड़ी पर जैन समाज का अधिकार नहीं है।

पूर्व में श्री महावीर भगवान का मंदिर था, जीर्णोद्धार के समय श्री आदीश्वर भगवान की प्रतिमा विराजमान कराई गई लेकिन वि.सं. 1499 में कवि श्री मेघ द्वारा रचित ''तीर्थमाला'' में यहाँ के शांतिनाथ भगवान के मंदिर का उल्लेख है। आज भी इस मंदिर को शांतिनाथ भगवान का मंदिर कहा जाता है। मूलनायक श्री आदिनाथ, दोनो ओर श्री शांतिनाथ व श्री विमलनाथ भगवान विराजित है।

गाँव में विद्यमान शांतिनाथ भगवान का मंदिर का लेख वि.सं. 1255 में दुदंभि नाम दिया है। हो सकता है ग्राम के विस्तार में सम्मिलित होकर प्राचीन नाम विलोपित हो गया हो दूसरा शिलालेख सं. 1236 में नगर का नाम झड़वली स्पष्ट है गाँव के बीच में एक सुंदर बावड़ी है उसमें सं. 1272 का खण्डित लेख है जिसमें राजा धारावर्ष की पटराणी जीजादेवी जो नाडोल का चौहान राजा कल्हण देव की पुत्री और शृंगारी देवी की बहन थी। इसने बावड़ी बनवाई।

राजा धारावर्ष की दूसरी पत्नी शृंगार देवी ने इस मंदिर में एक वाड़ी वि.सं. 1255 में भेंट की जिसका शिलालेख मंदिर की चौकी के बाईं ओर गोखले के ऊपर के पाट पर उत्कीर्ण है। इससे यह स्पष्ट है कि सं. 1252 में जीर्णोद्धार कराया, छः चौकी बनाई, उसमें रानी शृंगार देवी, महावीर भगवान का मंदिर का दर्शन करने आई उस दिन वि.सं. 1255 आसोज सुदि 7 बुधवार को धर्मशाला व वाड़ी को दाणी की साक्षी में भेंट की। इस बावड़ी को ''देव की बाव'' कहते है। इसका शिलालेख बावड़ी में विद्यमान है। उस समय महावीर भगवान मूलनायक रहे।

वि.सं. 1499 के आस पास मेघ कवि द्वारा रचित तीर्थमाला में शांतिनाथ भगवान का मंदिर का वर्णन किया है।

वर्तमान में मूलनायक श्री आदीश्वर भगवान है फिर भी लोग शांतिनाथ भगवान का मंदिर कहते है। प्रतिमा पर सं. 1632 का लेख मूलनायक के पीछे नीचे सं. 1632 का लेख है। आदिनाथ की प्रतिमा व परिकर की बनावट में अंतर है। मूलनायक परिकर प्राचीन प्रतीत होता है। मंदिर दाईं ओर एक भोयरा है। जिसमें खण्डित प्रतिमाएँ होना बताया हैं।

यह बावन जिनालय का मंदिर है। इसमें स्थापित तोरण कलात्मक व आकर्षक है। कुल 45 देवरियां है। जिनमें तीर्थोंकरों की चित्रावली बनी हुई है। पीछे दो–दो काउसग्गीय मुद्रा की प्रतिमा स्थापित है। उक्त प्रतिमाओं के अतिरिक्त श्री मुनिसुव्रत भगवान, श्री महावीर भगवान आदि की प्रतिमाएं विद्यमान है। मंदिर का जीर्णोद्धार दो वर्ष पूर्व हुआ। झाड़ोली गांव के नाम से मेवाड़ देशोद्धारक आ. जितेन्द्रसूरीजी म.सा. की प्रेरणा से बाहर एक ओर देवरी बनाकर श्री धर्मनाथ भगवान बिराजमान किए दूसरी ओर देवरी में मणीभद्रजी बिराजित किए गए ।

मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, शृंगार चौकी बने हुए हैं।

मंदिर की वार्षिक ध्वजा मिगसर सुदि 6 को चढ़ाई जाती है।

मंदिर की देखरेख श्री जैन श्वेताम्बर पेढ़ी झाड़ोली द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र :– 02971–220170

मंदिर की प्राचीनता का प्रमाणीकरण का लेख

शांतिनाथ भगवान के मंदिर के परिकर का लेख भोयरा में रखा

संवत् 1145 ज्येष्ठ वदि द्वितीयायां प्राग्वाटवंश्यवरदक सद्गुणपुत्रेण यक्षदेवेन आद्यजिनेशप्रतिमा चक्रे शिवशर्म्मलाभाय। मंगलं महाश्रीः।।

भोयरा के ही खण्डित परिकर का लेख

संवतृ 12 वर्षे 34 वैशाष वदि त्रयोदश्यां सेसेतंग समुद्धारि श्रीसंघेन श्रीमहावीर.... ....

भोयरा मे रखा परिकर के गादीका लेख

संवतृ 1236 फागुण वदि 4 गुरौ श्रीपार्स्व(र्श्व)नाथप्रतिमा प्रतिष्ठिता झाडवलीवास्तव्य श्रे0 पामदेव पुत्रसांवत श्रे0 आपिग श्रे0 पासिलेन कुटुंव(ब)सगे(हि)तेन च निजजननीश्रेयसे स्वश्रेयोथ कारिता।।

मंदिर के चौकी के बाईं ओर के गोखले के पाट पर लेख

।। संवत् 1236 फागुण वदि 4 गुरौ श्रीरि(ऋ)षभनाथबि(बिं)बं प्रतिष्ठितं श्रीदेवभद्रसूरिभिः।। झाडवलीवास्तव्य श्रे0 ऊधरणभार्या देमतिपुत्रसोढागाहराभ्यां आत्मश्रेयोर्थं कारितमिति।।

।। ऊँ।। श्रीवर्द्धमान विभुरद्भतशारदेन्दु–

दोंषनुषंगविमुखः सुभगः शुभाभिः।

आढयंभविष्णुरमलाभिरसौ कलाभिः

संतापमंतयतु कौमुदमातनोतु।।1।।

श्रीमति धारावर्षे विक्रमतर्षे प्रमारकुलहर्षे।

अष्टादशशतदेशोत्तंसे चंद्रावतीद्रंगे ।।2।।

श्रीमत्केल्ह ( ) णमंडलपतितनयायां नयैकशालिन्यां।

तत्पट्टप्रणयिन्यां शृंगारपदोपददेव्यां ।।3।।

एतद्भमप्राभववैभवभृति तत्प्रदत्तसाचिव्ये।

सकलकलाकुलकुशले गृहमेधानि नागडे सचिवे ।।4।।

दिः(द्वि)स्मरशरदिनकरमितवर्षे (1252)

शुचिशस्यसंपदुत्कर्षे।

दुंदुभिनामानि धामानि ( )

विदग्धपल्लवितधर्मधियां ।।5।।

एतत्झ्झट्कचतुष्किका विचरचित (ता) श्री मण्डपोद्धारतः पुण्यं पण्यमगण्यमाकलयति श्रीवीरगोष्ठी जनः।

मन्ये किं नु चतुष्किकाद्वयमिंद दत्तभिमुख्यस्थितिस्थेयस्त(या त)त्कलिमोहभूपयुगलीं जित्वातपत्रद्वयी।।6।।

इंदुः कुंदसितैः करैः पुलकयत्याकाश ( ) लक्ष्मीं मृदुयावद्धनुरसौ तनोति परितोप्याशाः प्रकाशोज्जवलाः।

तावद्वार्मिक धर्म (कम्र)रभसप्रारब्धकल्याणिकस्नात्राद्युत्सवगीतवाद्यविधिभिः जीयात्रिंक सर्वतः।।7।।

राज्ञा(ज्ञया) शृंगारदेव्यात्र वाटिकाभूमिरद्भता।

दत्ता श्रीवीरपूजार्थं शास्त्र(श्व)तः श्रेयसः श्रिये।।8।।

साक्षिता दा( )णिकः साक्षात्प्रेक्षादाक्ष्यबृहस्पतिः।

अत्राभून्नीरडो धर्म्मा(र्म्मी) सौत्रधारेषु कर्म्मसु।।9।।छ।।

पूज्यपरमाराध्यतमश्रीतिलकप्रभसूरीणां कृतिरियं।।छ।।

संवत् 1255 आसोय(श्विन्) सुदि 7 बुधवारे सकलगोष्ठिकलोकः त्रिकोद्वारं स्वश्रेयसे कारितवानिति।।छ।।

भोयरा में रखी खण्डित मूर्ति का लेख

संवत् 1475 वर्षे माघ शुदि 2 गुरौ प्राग्वाटज्ञा0 व्य0 नरपाल भा0 संसारदे पु0 लाषाकेन भा(0) धरणू पु0 मूंजा सयणा सारंग सिंघा सहितेन पित्रौः श्रे0 श्रीशांतिनाथःकारितः प्रति0 कच्छोलीवालगच्छे श्रीसर्व्वाणंदसूरीणामुप(देशेन)।

शांतिनाथ भगवान का लेख

सं0 1632 श्रीआदिनाथबिंबं संप्र....तं कारितं प्र0 तपागच्छे श्रीहीरविजयसूरिभिः उपा0 श्रीधर्मसागरगणिः प्रणमते।

धातु में खण्डित मूर्ति का लेख

सं0 1643 वर्षे द्वि0 वैशाष वदि 3 रवौ गंधारवास्तव्य श्रीमालीयज्ञातीय दो जाऊआ भार्या बा(0) लाडकी पुत्री बा(0) श्रीबाईनाम्ना(म्न्या) श्रीअभिनंदन(स्त्र)ामिबिंबं कारापितं तपागच्छे श्रीहीरविजयसूरिराज्ये श्रीविजयसेनसूरिभिः प्रतिष्टितं।।

भोयरा में खण्डित मूर्ति का लेख

सं (0) 1672 वर्षे श्रीलाषाश्रीधर्मनाथ.... ....

खण्डित मूर्ति का लेख

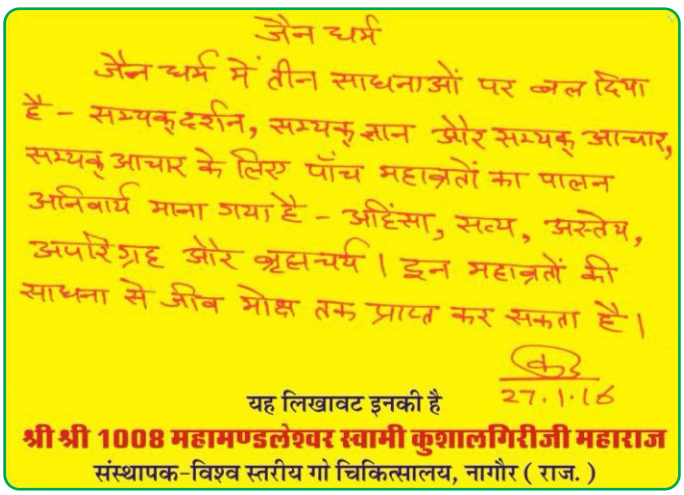

श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, सिवेरा

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही से सिरोही रोड़ स्टेशन के मार्ग पर स्थित झाड़ोली गाँव से 3 किलोमीटर सिरोही रोड़ स्टेशन से 8 व बामनवाड़ जी से 6 किलोमीटर दूर गाँव के मध्य में स्थित है। यह मंदिर 960 वर्ष प्राचीन है। जैसा कि मूलनायक भगवान के नीचे वि.सं. 1190 वैशाख शुक्ला 8 का लेख है। जिसका आचार्य श्री शात्याचार्य द्वारा प्रतिष्ठा कराने का लेख है। परिकर पर वि.सं. 1198 का लेख है जिसकी प्रतिष्ठा आचार्य ईश्वर सूरि जी ने कराई। मंदिर में वि.सं. 1289 का लेख है।

मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, शृंगार चौकी आदि निर्मित है। गाँव के मध्य में स्थित होने से गृहस्थ के मकानों की दीवारों से घिरा हुआ है।

प्रतिमा श्वेत + हरा + सलेटी रंग युक्त पाषाण की बनी हुई है।

मंदिर में आवास व भोजन की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

मंदिर की देखरेख श्री कल्याणजी परमानन्द पेढी सिरोही द्वारा की जाती है।

नोट : पिण्डवाड़ा के एक जैन परिवार की दुकान है वहीं मंदिर की व्यवस्था करते है। इस

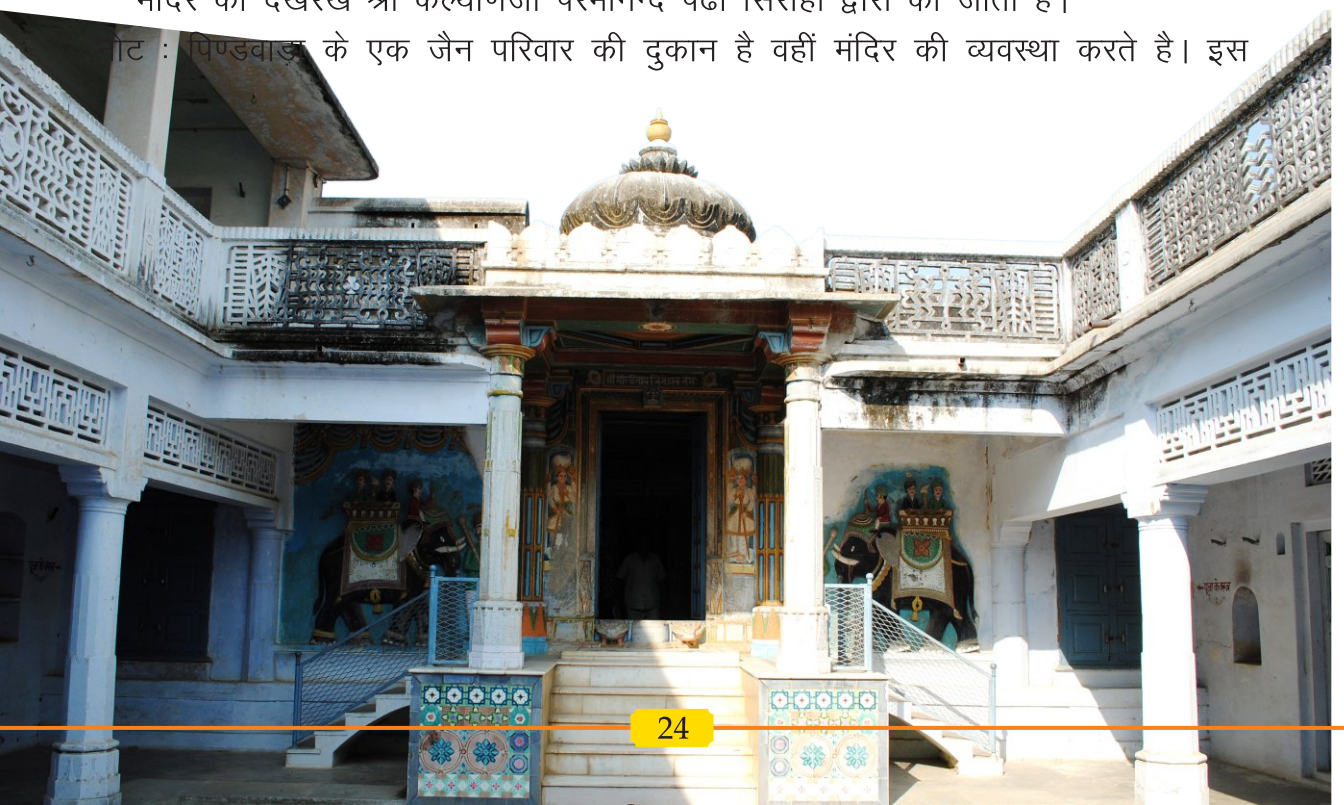

जैन परिवार के सदस्य चन्द्रभाण जेता जी ने एक बगीचा मंदिर को अर्पण किया।

सम्पर्क सूत्र : 02472–222525, 09460171752, 09928161273 (पुजारी श्री विनोद)

मंदिर की प्राचीनता का प्रमाणीकरण का लेख

मूलनायक के गादी का लेख

संवत् 1109 वैसा(शा)ख सुदि 8 गोष्ठया श्रीशांतिनाथप्रतिमा कारिता।। श्रीशात्याचार्यैः प्रतिष्ठिता।।

मंदिर के गूढ़ मण्डप के बाईं ओर गोखला में परिकर की प्राचीन गादी लगी उस पर लेख

संवत् 1198 वैशाख सुदि 3 छारा सुत भूणदेव भार्या वेल्ही पुत्रैः धणदेवजिंदुश्च सहदेव जसधवलश्रावकैः। निजभग्नी महणी सुपुत्र जेसलप्रभृतिसहितः। श्रीनाणकगच्छ प्रति पढ(?) सीपेरकस्थानश्रीशांतिनाथचैत्ये श्रीमहावीर बिंबं कारितं श्रेयोनिमित्तं श्रीधनेश्वराचायः प्रतिष्ठितमिति।।

धातु की मूर्ति का लेख

श्रीभावदेवाचार्यगच्दे धणदेवबहुदेवाभ्यां पितु(तृ) उसभश्रेयोर्थं रीषज्ञभबिंबं कारितं।। संवत् 1214 वर्षे फाल्गुन सुदि 3 सोमे।

मंदिर के गूढ़मण्डप के बाईं ओर गोखला के प्राचीन परिकर की गादी का लेख

संवत् 1224 ज्येष्ठ सुदि 9 शुक्रे श्रीनाणकीयगच्छे सीपेरकचैत्ये पुंनिगसुत व0 जेमलेन पुत्र नेरा साजण वूल्हण सलषण वासल आसल समस्तकुटुंबसहितेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमहेन्द्रसूरिभिः।।

मंदिर के मुख्य दरवाजा में प्रवेश के समय दाईं ओर दीवार पर लेख

।।संवत् 1289 वर्षे देवरा (डा) विजयसीहसत्कमहं0 पारासन आपणा आभाव्यपद ढीवरासत्मक जवाषेबढाकुया प्रतिज वसइ 2 देवश्री सां(शां)तिनाथयात्र(।) दीधी।।

मूलनायक के पालती पर लेख

सं0 1598 श्रीशांतिनाथमूलनायकः प्रा0 सं0 लींबा सुत....रा व्य0 रूदा मं0 दउीता कारितः ... ...

संवत् 1665 वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुसल कातिक चौमासु कीघु ठाणाः 2 सीवेरा ग्रामे।

अहो जिन मंदिर, जिन प्रतिमा, जिनागम एवं साधु-साध्वी,
श्रावक-श्राविका स्वरूप सात क्षेत्रों में बोया हुआ
धान अनंत अक्षत मोक्षफल को देने वाला बनता है।

श्री महावीर भगवान का मंदिर मालणुं (पाली)

यह शिखरबंद मंदिर पाली-सिरोही जिले की सीमा पर सिवेरा से 5 मीटर व सिरोही रोड़ स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर ग्राम के मध्य में स्थित है।

बतलाया गया कि यह मंदिर 1500 वर्ष प्राचीन है। यह 52 जिनालय जैसा निर्मित मंदिर है। पूर्व में 52 जिनालय मंदिर ही था, वर्तमान में सभी देहरिया रिक्त है।

मंदिर की बनावट से ज्ञात होत है कि मंदिर प्राचीन है। मंदिर में यक्ष व यक्षिणी की मूर्तियें स्थापित है। मातंग यक्ष की प्रतिमा पर वि.सं. 2041 (11–05–1985) लेख है।

मंदिर की देखरेख जैन संघ पेढ़ी चामुण्डेरी जो इस ग्राम से 5 किलोमीटर दूर है, द्वारा की जाती है।

सम्पर्क सूत्र 09929431318 (पुजारी श्री देवराम रावल)

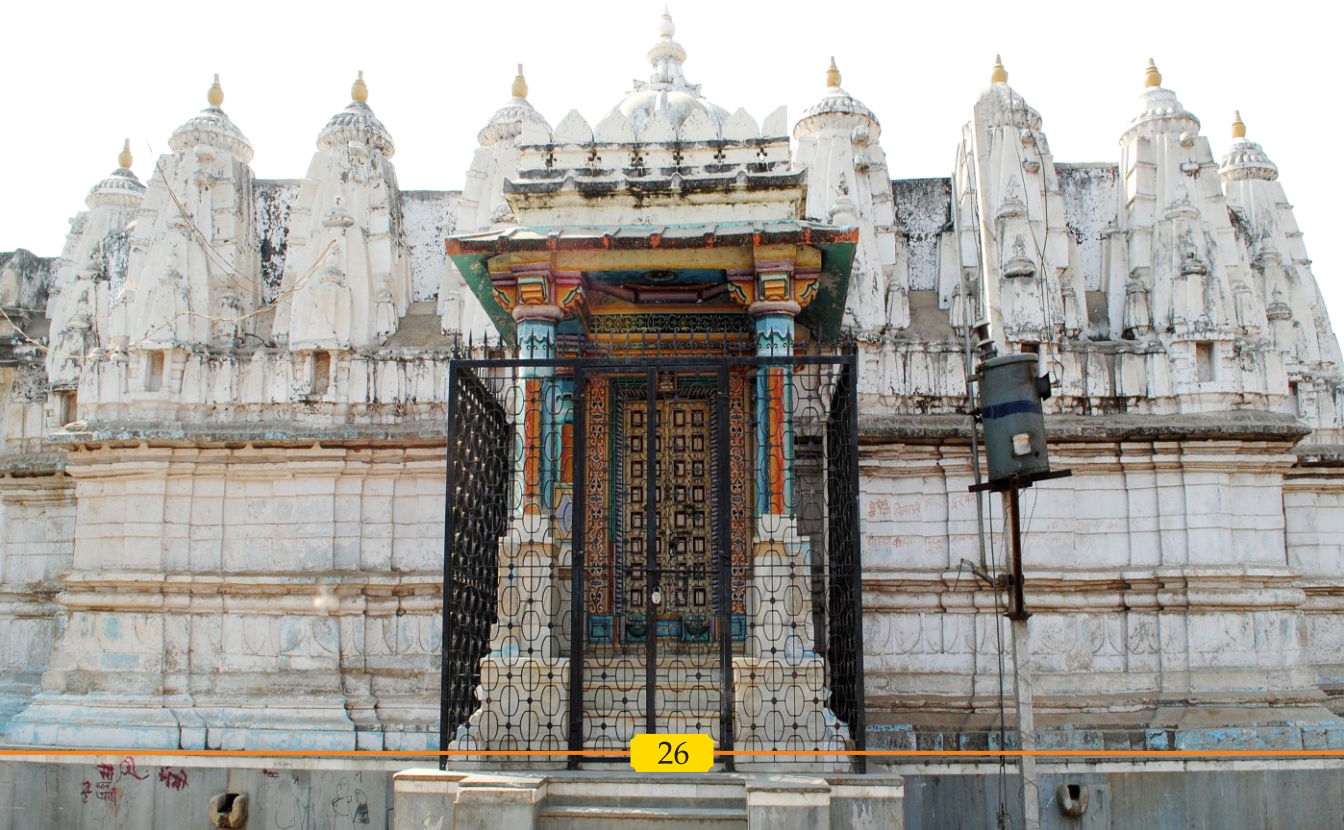

श्री महावीर भगवान का मंदिर, बामनवाड़ जी तीर्थ

यह शिखरबंद मंदिर सिरोही मुख्यालय से 14 किलोमीटर, सिरोही रोड़ स्टेशन से 8 किलोमीटर दूर स्थित है। यह 52 जिनालय संरचना का 35 देवकुलिकाओं का मंदिर हैं।इस तीर्थ का प्राचीन नाम जैन साहित्य व शिलालेख के अनुसार ब्राह्मण वाटक है, यह जीवत स्वामी तीर्थ के नाम से जाना जाता है।इस मंदिर को ''तपागच्छपट्टावली'' के अनुसार महाराजा सम्प्रति ने बनवाया।ऐसा कहा जाता है कि प्राचीन समय में छोटा मंदिर था जो जीर्ण शीर्ण था उसका जीर्णोद्धार करा सम्प्रति ने विशाल मंदिर बनवाया। महाराजा सम्प्रति प्रतिवर्ष 5 तीर्थों (शत्रुंजय, गिरनार, शंखेश्वर, नांदिया व बामनवाड़जी) की बारह बार यात्रा करते थे जिसमें ब्राह्मणवाड भी था। आचार्य श्री नागार्जुनसूरि, स्कंडिलसूरि, पादलिप्तसूरि आदि पाँच तीर्थों की यात्रा करते थे उसमें ब्राह्मणवाड़ का नाम भी सम्मिलित था।

वर्धमान तपोनिधि आचार्य देवेश श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा. के भगवान महावीर से संबधित सुंदर चित्रपट पेन्टर को स्वयं आईडिया देकर बनवाये है जो दर्शनीय है।

श्री जयानंदसूरि के उपदेश से सं. 821 के आस–पास पोरवाड़ मंत्री सामन्त ने 900 मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया जिसमें एक ब्राह्मणवाड़ भी था। आचलगच्छीय श्री महेन्द्रसूरि द्वारा सं. 1300 के आसपास में रचित ''अष्टोत्तरी तीर्थमाला'' में उल्लेख किया है कि ब्राह्मणवाड़ में महावीर भगवान के मंदिर में भगवान महावीर के चरणों की धूल है।

जैसा कि लिखा गया है कि यह जीवत स्वामी का मंदिर है।

आबूरोड़ के पास स्थित मूंगथलातीर्थ का जीर्णोद्धार के समय खुदाई में वि.सं. 1426 का शिलालेख मिला। जिसमें वर्णन है कि महावीर भगवान (37 वर्ष में) के छद्मस्थ अवस्था में इस भूमि में विचरण किया उस समय श्री देवा नामक श्रावक ने यह मंदिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा केशी गणधर द्वारा की गई। इस शिलालेख से स्पष्ट है कि महावीर भगवान इस क्षेत्र (मूंगथला) नांदिया, ब्राह्मणवाटक दियाणा नाणा आदि स्थानों पर जीवंत स्वामी का प्रतिमा विराजित है। इसीलिए इसी क्षेत्र में ग्वाला द्वारा कान में कीले लगाना, चण्डकोशिया नाग का उपसर्ग इसी क्षेत्र का है।

श्री महावीर भगवान के 34 वें पट्ट धर श्री उद्योतन सूरि ने सम्मेत शिखर जी की पाँच बार यात्रा करने के पश्चात उक्त तीर्थों की यात्रा कर आबू की तलहटी के पास तेली गाँव में वृक्ष के नीचे विश्राम किया। आठ शिष्यों को आचार्य पद्वी प्रदान की थी।

श्री सोमप्रभ सूरि (43 वें आचार्य) के शिष्य जगच्छचन्द्रसूरि, श्री देवभद्रसूरि एवं देवेन्द्रसूरि जी ने वि.सं. 1283 में प्रहलानपुर का चतुर्मास समाप्त कर उक्त तीर्थों की यात्रा करने का उल्लेख हैं।

कवि लावण्ययस गणि (सं. 1529 की दीक्षा) श्री विशालसुंदर जी (सं. 1685 के आसपास) पं. श्री सोम कुशल (सं. 1657 के आसपास) श्री वीरविजय जी (सं. 1708) में इन तीर्थों की काव्यमय महिमा का वर्णन किया है।

जब महावीर भगवान छद्मस्थ अवस्था में इस क्षेत्र में विचरण किया उस समय का यह मंदिर निर्मित था अर्थात् करीब 2600 वर्ष प्राचीन है।

इस मंदिर को बहुत चमत्कारी माना है। इस ग्राम में कोई बस्ती नहीं है और कोई जैन नहीं रहते इसलिए कई जैन अपनी मनोकामना सिद्ध करने के लिए आते है और मनोकाना भी पूर्ण होती है। यहाँ अधिकतर रेबारी, राजपूत व गरासिया आते है।

महावीर भगवान की प्रतिष्ठित प्रतिमा चमत्कारी है इसके लिए एक प्रमाणिक कथा है :– नांदिया के ठाकुर शिवसिंह वि.सं. 1876 ज्येष्ठसुदि 5, यहाँ आए तो मंदिर के पुजारी श्री अमराजी रावल ने कहा कि बामनवाइजी से आप क्या विनती कर रहे हो, जाओं आप को तीन दिन में सिरोही का राज्य मिल जायेगा। ठाकुर ने आश्चर्य से पूछा कि यह क्या कह रहे हो, तो उत्तर में यहीं कहा कि मैं नहीं कह रहा हूँ यह बामनवाड़ जी कह रहे हैं और तीन दिन ठाकुर को सिरोही राज्य की राजगद्दी मिल

गई अर्थात् राजा बन गए। इस चमत्कार से प्रभावित होकर ठाकुर बामनवाड़ जी दर्शन करने आए और प्रतिमा बनवा कर हाथी पर लगाई जो आज भी विद्यमान है। इस प्रकार ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण कर ब्राह्मणवाड़ के द्वार पर है। इस घटना के बाद कई जैन लोग दर्शन–पूजा के लिए आने लगे और इसके बाद प्रतिवर्ष यहाँ फाल्गुन शुक्ला 11 से 15 (पूर्णिमा तक) मैला लगता है। महाराव शिवसिंह ने वि.सं. 1876 ज्येष्ठ शुक्ला 15 को ताम्रपत्र लिखकर तीर्थ को सुव्यवस्था के लिए अरठ, बावड़िया व योग्य जमीन अर्पण किये।

तीर्थ की महानता व चमत्कारिता को देखते हुए वि.सं. वैशाख सुदि 15 को 88 गाँवों के रेबारी के सदस्य आए और बामनवाड़ जी के दर्शन किए। योगीराज श्री शांतिविजय ने उन्हें उसी दिन उपदेश दिया जिससे उन्होंने माँस व मंदिरा का त्याग कर दिया। वि.सं. 1989 में अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर पोरवाल सम्मेलन में आचार्य श्री शांतिसूरि जी को कई पद्वियों से अलंकृत किया।

इसी प्रकार 7 मार्च 1935 को 23 नरेश (राजा–महाराज) यहाँ दर्शन करने आए और योगीराज से भी आशीर्वाद लिया।

मंदिर के तीनों ओर विशाल परकोटा व गजद्वार बने हुए है तथा मुख्य मंदिर अति प्राचीन है जिसका वर्णन ऊपर किया है तथा पूर्ण वास्तुशिल्प के आधार पर कलात्मक रूप से निर्मित है। मंदिर में रंगमण्डप, सभामण्डप, नव चौकी व शृंगार चौकी बनी हुई है।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर पद्मावती देवी, अम्बादेवी, भीतर की ओर गौतम स्वामी व सुधर्मा स्वामी प्रतिमाएँ विराजित है। आगे विशाल चौक है जिसके तीनों और महावीर भगवान के 27 भव सुन्दर ढंगसे चित्रित किए हुए हैं। आगे विशाल रंगमण्डप है जो कलात्मक है तथा सभामण्डप के बाहर दोनों ओर सहस्त्राफणा पार्श्वनाथ भगवान की आकर्षक प्रतिमाएँ हैं।

मूलनायक श्री महावीर भगवान की प्रतिमा चमत्कारिक है जिसका वर्णन इस प्रकार किया है। यह प्रतिमा रेत की बनी हुई है।

मंदिर की प्राचीनता के प्रमाणीकरण के लेख

श्री महावीर भगवान के मंदिर में एक धातु की मूर्ति का लेख

सं0 1349 ज्येष्ठ सु 10 श्रीदुस्साधन्वये महं0 हरिराजपुत्रेण समरसिंहेन स्वपितामही महं हासलदेविश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्र0 बृहदगच्दे श्रीमुनिरत्नसूरिभिः।

धातु की मुर्ति का लेख

सं0 1482 वर्षे कार्तिक सु0 13 गुरु प्राग्वाट व्य0 कर्म्मा भार्या रूडी पु0 पिथु पर्वत पित्रो(:) श्रेय(से) श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं.... ....भ0 श्रीसिरचंद्रसूरिपट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः।

धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख

संवत् 1509 वर्षे मार्ग्गशि(शी)र्ष सुदि 7 दिने उ(ऊ)केशवंशे बृहद्(त्)शाखायां सा कणा पुत्रेण

कमला भार्या सभीरदेपुत्र सीधरेण भा0 सुहणदे पुत्र मंडलिकयुतेन श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिभिः।

डेरी नं. 2 के दरवाजे का लेख

संवत् 1519 वर्षे मग(मार्ग)शुदि 5 वीरवाडाकवासी प्राग्वाटज्ञातीय वाव(0) सायस(0) भार्या नलष्मी पुत्र वा0 गदा भार्या देवले पुत्र वा0 देवाकेन भार्या कीन्हम्पदे(?) पुत्र वा0 बाबर आदिकुटुंबयुतेन श्रीब्राह्मणवाडमहास्थाने देवकुलिका कारिता।

मंदिर के डेरी नं. 7 के दरवाजे का लेख

सं0 1519 वर्षे मार्गशुदि 5 दिने प्रा0 सं.0 सोमा भार्या मंदोअरि पुत्र सं0 देवाकेन भा0 दाडिमदेयुतेन ब्राह्मणवाउके श्रीवीरप्रासादे देवकुलिका कारिता।।

डेरी नं. 9 के दरवाजे का लेख

स्वस्ति संव(त्) 1519 वर्षे पनासीआवासिप्राग्वाटज्ञातीय मं0 झांझा भा0 थावलदे पुत्र मं0 कूपाकेन भा0 कामलदे पुत्र गहिंदा कूंभादिकुटुंबयुतेन स्वरेयसे श्रीबांभणवाडमहास्थाने देवकुलिका कारिता श्रीः।।

डेरी नं. 10 के दरवाजे का लेख

सं0 1519 वर्षे वीरवाटकवासि प्राग्वाटज्ञातीय वा0 गदा भार्या देवलदे पुत्र वा0 सोगाकेन भार्या सिंगारदे पुत्र आसादिकुटुंबयुतेन श्रीबांभणवाडमहास्थने देवकुलिका कारिता। श्री प्र0 श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

डेरी नं. 24 के दरवाजे का लेख

स्वस्ति संवत 1519 वर्षे मार्गशुदि 5 प्राग्वाटज्ञातीय व्यय(0) छाडा भार्या खेतू पुत्र हरपाल लखाकेन भा0. अलू पुत्र गोमा बाभणवाडस्थाने श्रीमहावीरभु(भु)वने देहरी? कारिता।

डेरी नं. 26 के दरवाजे का लेख

सं.0 1519 मार्गशुदि 5 प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 राया भा0 रामादे पुत्र व्य0 हीराकेन भा0 रूयड पुत्र देपा धर्मा दला धां(धल) आदिकुटुंबयुतेन श्रीबांभणवाडस्थाने देवकुलिका कारिता श्रीः।

डेरी नं. 27 के दरवाजे का लेख

सं. 1519 वर्षे वैशाखसुदि 13 दिने प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 धना सा0 बाह पुत्र सं0 मीठाकेन भा0 सरसति थडसीयुतेन ब्रांह्मणवाडकश्रीवीरप्रासादे देवकुलिका कारिता।

डेरी नं. 29 के दरवाजे का लेख

सं0 1519 वर्षे मार्गशुदि 5 दिने प्रा0 ज्ञा0 व्य0 वरदाकेन भा0 मानकदे पुत्र षाखा भा0 जइतू पुत्र व्य0 वरडाकेन भा0 कामदे पुत्र पाल्हायुतेन बांभणवाडकश्रीवीरप्रासादे दुवकूलिका कारिता।

डेरी नं. 31 के दरवाजे का लेख

सं0 1510 वर्षे मार्गशुदि 11(5) दिने प्राग्वाटज्ञातीय व्य0 पी(पि)ता नेसा भा. मालदे पुत्र सूराकेन भा0 मांगी बा0 देणद पुत्र मेरा तोला युते(न) श्रीवीरप्रासादे देवकुलिका कारिता श्रीब्राह्मणवाटके।

डेरी नं. 22 के दरवाजे का लेख

सं0 1521 वर्षे मा0 शुदि 13 प्रा0 तेलपुरवासि व्य0 सोमाकेन सा0 वरा पुत्र व्य0 गागा सुंदर षाषा वना देवा वरस0 तन्ह(?) आदिकुटुंबयुतेन स्वश्रे0 देवकुलिका कारिता श्रीः।।

डेरी नं. 23 के दरवाजे का लेख

सं0 1521 वर्षे भाद्र(माघ) शुदि 13 प्रा0 घाजववासि व्य0 सोमा व्य0 मांडण व्य0 हेमराज व्य0 विलाकेन पुत्र पावा व्य0 सलखादिकुटुंबयुतेन वडप्रासादः का0 प्र0 भ। श्रीलक्ष्मीसागरसूरि श्रीसोमदेवसूरिभिः।।

धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा पर लेख

सं0 1553 वर्षे माघ शुदि 6 सोमे उसच(?) गोत्रे उसवालज्ञातीय सा0 सहजा भा0 राभू पु0 खेता भा0 हेमी पु0 भोपा ता नीबासहितेन पूर्वजपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथबि(बिं)बं कारितं प्र0 ज्ञानकीयगच्छे भ0 श्रीधनेश्वरसूरिभिः।

डेरी नं. 16 की मूर्ति पर लेख

संवत् 1663 वर्षे श्रीमहावीरबिंबं प्र0 विजयसेनसूरि..... ....

मंदिर की श्रृंगार चौकी के बाहर दाईं ओर एक डेरी पर लेख

।।सं0 1719 वर्षे माघ व(दि) 8 सोमे श्रीसीरोहीनगरे महाराज श्रीअखयराजजी विजय(यि)राज्ये वीरवाडासमीपे श्रीमहावीरजी.... ....सन्मुष(ख) स्तुंभवास्तव्य प्राग्वाटजातीय वृद्धि(द्ध)साषायां सकलमंत्रीश्वर शिरोमणि साहश्री वणवीरजी पु(0)साह.... ....जी भा0 साहिबदे पु(0)सा(0) श्रीधर्मदासजी धनराजजी सा(0) धर्मदासजी भा(0) जीवादे पु(0) रघुनाथ द्वि0 भा0 रुषमादे पु0 राईचंद गोकल श्रीधनराज भा0 केसरदे सुखमादे पु(0) जगनाथ सकलकुटुंबकेन तपगच्छनायक भ(0) श्रीविजयराजसूरिशिष्य0 श्रीशिविजयशिष्य0 श्रीसिंघविजयपादुका कारापिता। सा श्रीधर्मदासजी धनराजकेन पं0 श्रीशीलविजयगणि(ना) श्रीसीरोही वीरवाडाचतुर्विधसंघसमस्तमुदायेन.. ... .संस्थापित.... ....

मंदिर की दूसरी जोड़ी पर लेख

सं। 1742 वर्षे ज्येष्ट सुदि 5 सोमे पुष्यनक्षत्रे। भ। श्रीविजयमानसूरिराज्ये भ। श्रीविजयसेनसूरि शि।पं। श्रीरामविजय ग। शि । पं। श्रीशिवविजयगणिनां पादुका पं । श्रीशीलविजय

ग। पं। वीरविजय ग।पं।आणंदविजय पं। भीमविजय ग। प्रमुख सर्वशिष्य समुदायेन वंद्यमाना चिरं नंदतु शुभं भवतु।।

मंदिर के तीसरी जोड़ी का लेख

।। श्री ।। पं। रूचिविजयजी पादुका।।

। शि । पं। श्रीदेविं(वें)द्रविजयजी पादुका।।

।। संवत् 18 आ. 69 वर्षे शाके। 1734 प्र। पोष सुदि 13 गुरौ प्रतिष्टिता।

मंदिर के हाथीखाना के पास छोटी डेरी में चार जोड़ी पादुका का लेख

।। 1869 वर्षे मासोत(त्त)ममासे सु(शु)कलपक्षे पं। भाग्यविजयजी तत्शी(शि)ष्य पं। रत्नविजयजीनी पादुका।। त्रयोदशी ती(ति)थौ। प्रतीष्टितः(तिष्ठिता)।।

धातु की पंचतीर्थी का लेख

सं0 ....वर्षे वैशाख शुदि 9 गुरौ श्रीमालिज्ञाति(ती)य वृद्धशाखायां सा शिवचंद सुत सा धर्मचंद्रेण स्वश्रेयोऽर्थं श्रीआदिनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च श्रीसागरगच्छेशभट्टारकश्री 1(00)8 श्रीशुभसागरसूरिभिः।

महाराव ने जागीर भेंट की जिसके ताम्रपत्रक की नकल

(सही) श्रीमा(म)हादेवजी

महारावजी श्रीशिवसिघ(सिंह)जी कु (कुं) वरजी श्रीगुमानसिघ(सिंह)जी बचनायतां।

गाव वीरवाडो प्रगने रूवाई रे सीरो लागत वराउ सदामद सिरोही रे दरबार लागे तको श्रीबामणवाडजी रे कारखाने चढायो सो हासील राज रो आदमी रेव ने उगरावसी ने कारखाने परो लगावसी। देवडा राजपुत जागीरदार से वणा रे हासील सदामद परवांणे है सो खादे जावसी। श्रीदुवारकानाथजी परसवा पदारीया जरे गाम चीयार चढावीया जणापर श्रीसारणेश्वरजी रे, गाम वासो श्रीदवारकानाथजी रे, गांव देलदर श्रीअंबावजी रे भेट कीनो सो अरपण हुओ जावसी। अरठ ? हीराजीवालो गांम जणापर में जाव सुधा। अरठ पाटलावो जाव सुधा गांम पींडवाउे। अरठ 1 सरों री वाव गांव उंदरे जणरो हासल श्रीबामणवाडजी प्रमाणे सदामद लेसी। दुवे श्रीमुख पर दुवे सीगणोत जेता सीवा काना। दं0। सिं0 पोमा कांना रा। सं0 1876 रा जेठ सुद 5 गरू.

नवपद तीन तत्वों का समावेश

1. अरिहंत और सिद्ध दो देव है।
2. आचार्य, उपाध्याय और साधु के चार धर्म
3. ज्ञान, दर्शन और चारित्र और तप के चार धर्म ।